

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ● वर्ष २० ● पूर्ण अंक २३१ अंक ● अक्टूबर-२०२६ Volume no. 19, • Issue No. 231 • October 2026

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-





टोरेन्टो (केनेडा) मंदिर के १८ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते तथा सभा में आशीर्वाद देते और हरिभक्तो के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



गेटविक (यु.के.) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक पश्चात आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



सास्काटुन (केनेडा) मंदिर के पाटोत्सव पर ठाकुरजी की पूजा करते तथा यज्ञ में विधि करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।




नार्थ हेरो (यु.के.) मंदिर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की स्थापना करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।




आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर चट्टानुंगा (टेनीसी) में सत्संग सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन करते हरिभक्त ।



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

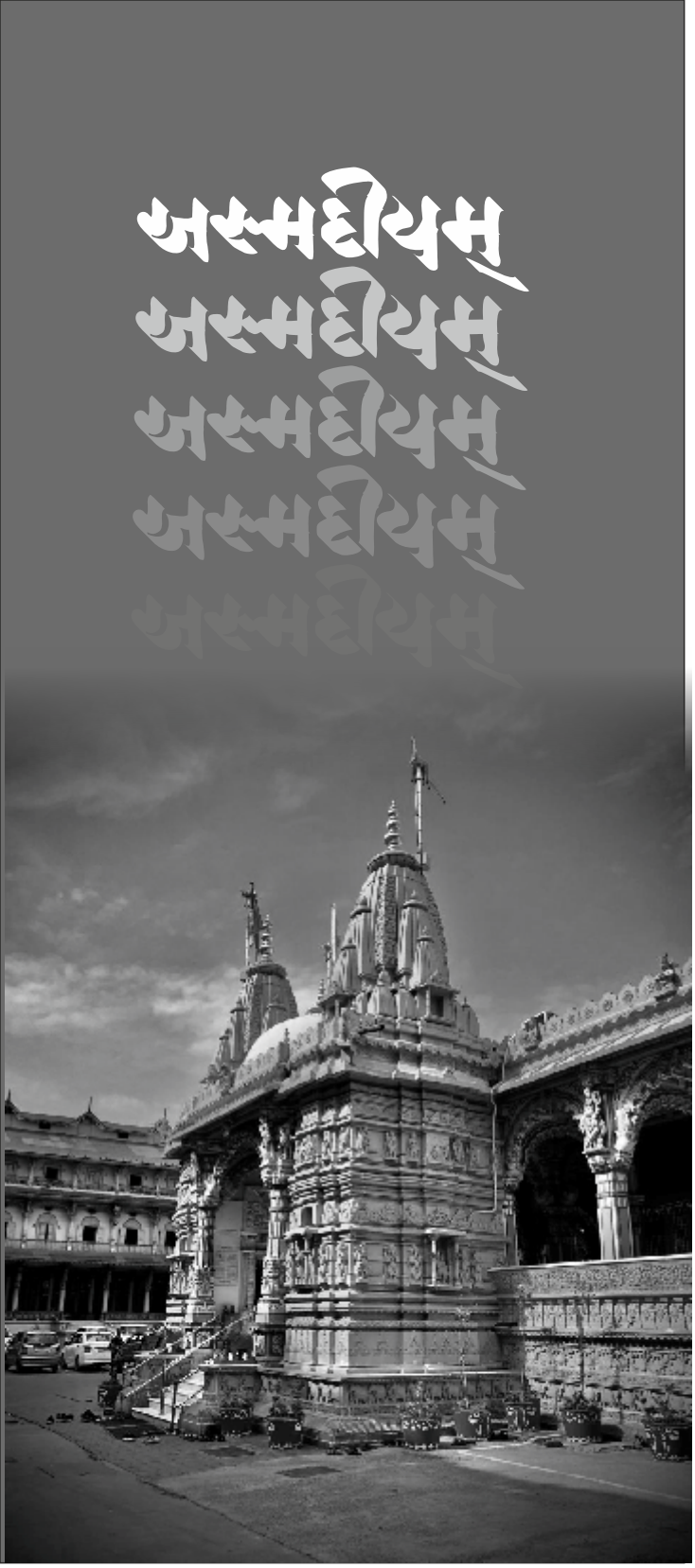
श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र



वर्ष - २० ● अंक : २३१ ● अक्टूबर-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीहरि के छठे, साँतवे और आठवें वंशज के मुख से अमृतवचन	०६
०४.	श्रीहरि के निज सेवा में संतो - भक्तो की अनेक सेवा	०९
०५.	धोलका देश की पंचतिथि	११
०६.	ठाकुरजी की सेवा विधि में महत्वपूर्ण विवरण	१४
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१६
०८.	भक्ति सुधा	१७
०९.	सत्संग समाचार	२०



श्री स्वामिनारायण

भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने हम सभी के श्रेय, कल्याण और मोक्ष के लिये तथा इस लोक के सुख के लिये गुरु रामानंद स्वामी के पास से दो वरदान माँगे। यह हम सभी जातने है। भगवान की कृपा से हम सभी को सुख प्राप्त हुआ है।

सर्व प्रथम तो प्रत्येक आश्रित मात्र के लिये श्रीहरि के द्वारा लिखा देश विभाग का लेख अवश्य पढे। यह हरिभक्त का फर्ज है। प्रातः पूजा के समय प्रतिदिन अवश्य पढे। यदि किसी के पास नही है तो कालुपुर मंदिर से प्राप्त कर ले।

दूसरा श्रीहरिने शिक्षापत्री के श्लोक नम्बर १४७ में आज्ञा किये है कि अपने गृहस्थ जीवन में दशवाँ भाग निकालकर श्रीकृष्ण भगवान को अर्पण करें।

आप की आज्ञानुसार धर्मादा देने से सहज कल्याण हो जाता है। हम अॅपने आत्मा से पूछे क्या हम यह कार्य करते है ? यदि नही करते है तो शीध्र शुरु कर दे। भगवानने हम सभी को सुखी किया है। हमें अपने नौकरी या व्यवसाय में से दशवां या बीसवा भाग धर्मादा करना चाहिए।

हम सभी का व्यवहार श्रीहरि चलाते है। यदि भक्तो को सुखी रहना है तो इस आज्ञा का अवश्य पालन करे।

दूसरा विशेषकर अपने धोलका मंदिर का २०० वर्ष का ''त्योहार'' का समय समीप रहा है। हम सभी इसमें तन, मन और धन से सेवा में जुड जाये। संकल्प सिद्धि से श्रीमोरली मनोहरदेव को खुश करें।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा (सितम्बर-२०२६)



१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री गणपतिजी महाराज की स्थापना आरती के अवसर पर पधारना।

२२ जलझीलनी एकादशी को श्री गणपतिजी की झाँकी में पधारना । कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर।

२२ से २६ कंटकी लंदन (U.S.A. I.S.S.O.) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (सितम्बर-२०२६)

३-४ वेनकुंवर केनेडा सत्संग सभा में पधारना।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर सास्काटन (केनेडा) सत्संग सभा में पधारना।

६ रजाईना (केनेडा) श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग सभा में पधारना।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री गणपतिजी महाराज की स्थापना आरती के अवसर पर पधारना।

विदेश सत्संग यात्रा

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडन लंदन मे दर्शन हेतु पधारना।

१९ केन्टोन हैरो श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन हेतु पधारना।

१९-२० श्री स्वामिनारायण मंदिर गेटविक (यु.के.) के २० वे पाटोत्सव पर पधारना।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर ब्राईटन (यु.के.) सत्संग सभा में पधारना।

२४-२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कंटकी लंदन (I.S.S.O. नया चैप्टर अमेरिका) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

२७-२८ चटानुगा टेनेसी (अमेरिका I.S.S.O. नया चैप्टर) में सत्संग सभा में पधारना।

३० नोरफोक वर्जीनिया (अमेरिका I.S.S.O. नया चैप्टर) सत्संग सभा में पधारना।

श्रीहरि के



छठे, साँतवे और आठवें वंशज के मुख से

अमृतवचनो

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन (U.S.A., I.S.S.O.) के २० वे पाटोत्सव के अवसर पर

प.पू. महाराजश्री : अब आप को ज्ञात हुआ कि डांगरवा में अब कोई नही रहता है । यह तो एक गाँव की परिस्थिति है । पूरे उत्तर गुजरात तथा दसकोसी में यही दशा है । आज सभा करना हो तो हरिभक्तो को खोजने जाना पडता है । आज एक गाँव में इतने लोग आये है । अरे जयेन्द्रभाई । आप के गांव वाले एक गाँव में एकत्र हुए है । कितने गाँव बचे है । लेकिन एक बात की खुशी है । हर्ष है, आभार विधि नही करना चाहता हूँ । लेकिन लोग भगवान के प्रति ममत्व, अपनापन रखकर मंदिरो में कार्य करते है । यह एक बडा सद्‌गुण का धर्म है । पहले दिन ही कहे थे । आज भी भगवान की कृपा, अपने बड़ो का आशीर्वाद समझे, या संस्कार माने यह सब मिलने पर यह कार्य होता है । लेकिन जहाँ पर एक गाँव का दूसरे गाँव से पहचान भी नही होती फिर भी उसके लिये हर्ष की आसु आता है । ऐसी दुनिया कही पर नही दिखाई देती है । २०२६ में स्मशान वैराग्य भी नही आता है । यह सत्य है । लेकिन आज के समय में भगवान के प्रति ममत्व, मंदिरको अपना मानना, मंदिर अर्थात् केवल मंदिर ही नही, मंदिर के अभिन्न अंग, इसमें पूरा वर्ग आ जाता है । देव हो, आचार्य हो, हरिभक्त रहे, संत रहे । यह सब मिलकर परिवार बने तथा इसके प्रति ममत्व हो । तब यह सब कुछ होता है ।

अभी बापजी का फोटो देखे, भगवान को देख रहे थे ठीक । भगवान हम सभी के सामने देखते है । हमे देखना बाकी है । चमत्कार यह नही कि भगवान हम लोगो के सामने देख रहे है । सीधे बोलू तो चमत्कार यह नही कि भगवान हम लोगो के सामने देख रहे है । हम भगवान के सामने देख रहे है । मैं यह कहना चाहता हूँ कि भगवान कहना चाहते है कि आप अच्छे होकर हमारे सामने देखते है । अभी लालजी महाराजश्री, अरविंदभाई से संतोने बात की है । इसी आधार पर आज सभी हरिभक्त कार्य कर रहे है । यह गौरव की बात है ।

मुझे याद आता है । पुराने समय की एक बात कहुँ जब **Meeting** करते थे तो प्राय: प्रात: काल में होती थी । रात्रि तक पूरी नही होती थी । लोग अधिक शिकायत लेकर आते थे । अब यह बंद हो गया है । किसी की शिकायत नही होती है । क्योकि अब **Maturity** (परिपक्वता) आ गयी है । **Maturity is not only with adults, maturity even with kids, So amount of affection, amount of** इस में **by that every one has going, girls, adults, young, youngster** बढता जा रहा है । जब भगवान का कार्य होता है । यह सब देखे तो **I think**

की बड़े बापजी १९७८ मे शुरु किये थे । तब **He should be first one to be feeling proud of** आज के समय में कल्पना भी नही कर सकते है । तब कई बदमाश लोग होते थे । कभी कभार एक दो लोग एकत्र होते थे । मुझे ज्ञात है, बापजी किसी स्थान पर जाते थे तो वनराज भगत बाहर खिडकी गिनते थे । कितनी गाडी आ और जा रही है । उस समय से जो लोग जुडे है । चन्द्रेशभाई तथा अन्य कई हरिभक्त है । पूरे **U.S.A.** के एन्दर **I think** बड़े बापजी को अन्दर से खुशी मिलती होगी । उन्हे दे रहे है । वही आशीर्वाद दे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री : इस अवसर का वर्णन करने के लिये शब्द छोटे पड जायेगे । एक प्रसंग बतायें । कई वर्ष पहले मैं केन्या गया था । वहाँ पर मंदिर का कार्यक्रम था । उस समय के वहाँ के राष्ट्रपति मोई अपनी सभा में आये थे । मेरे बगल में आकर बैठे थे । मुझसे कहे कि **All these red dot people, they are your people ?** मैने कहा हाँ **they belongs to us.** इसके बाद वह बोले पता है ? **I trust them the most even more than my own people.** (लाल **Dot** से युक्त यह सब आप के लोग है । ये हम से जुडे हुए है । इसमें मेरे से अधिक लोगो ने इसमें विश्वास है) उनके ये शब्द है जो विचार करने योग्य है । हम सभी स्वामिनारायण के ब्रांड एम्बेसडर है । यह ध्यान रखना है कि इसमें कमी नही आनी चाहिए । अपनी वाणी, विचार, व्यवहार आहार-विहार अच्छा होना चाहिए ।

एक छोटी बात कहे । अपने सम्प्रदाय की परिचित बात है । आप लोग भी जानते होगे । पूर्णानंद स्वामी की बात है । यह सब नंद संतो का उदाहरण है । यह हम सभी केलिये है । महाराज सभा में बैठे थे । पूर्णानंद स्वामी थोडा विलम्ब से आये । दूर खडे थे । स्वाभिमान बहुत था । यह विचार किये यदि बुलायेगे तो जायेगे । महाराज ने कहा सभी को ज्ञात है ? मान की मूर्ति देखा है ? यह सामने खडी है । आप सभी देख ले । पूर्णानंद स्वामी का अहम चोटिल हुआ । वह वहाँ से वापस चले गये । उनके शिष्य भी वापस ही चले । अब महत्व की बात यह है । आज के समय में स्वामी सभी को बुलाते है । अपने अलग ट्रस्ट बनाते है । पूर्णानंद स्वामीने क्या कहाँ । मेरे पीछे क्यो आ रहे हो ? हमारे पास कल्याण नही है । कल्याण तो वहाँ पर है । मैं तो अपने स्वभाव के कारण जा रहा हूँ । अंतकाल में महाराजने संतो को भेजकर उन्हे अपने पास बुलाये थे । उन्हे अपने धाम में ले जाने के लिये । उस समय स्वामीने कहा कि महाराज ने मुझे अहमी कहा है तो वह मुझे स्वयं लेने आयेगे । महाराज को आना पडा था । हमें इसी तरह की दृढता रखना है कि महाराज स्वयं लेने आये । वास्तव में यह अवसर अवर्णनीय है । और श्रीजी महाराज सदैव हम लोगो के साथ है । और हमेशा **we should feel presence of Maharaj almost with us, always.**

जिस उद्देश्य से **I.S.S.O.** प्रारम्भ किया गाय है । महाराज की अमी दृष्टि बनी रहे और **ultimate aims is that** (अन्तिम लक्ष्य यह है कि) सत्संग बना रहे । इन बच्चो में सत्संग है । यह अधिक कठिन है । सर्व प्रथम जब हम यु.के. में गये थे । वहाँ आफ्रिका से विस्थापित लोग आये । तब मंदिर कम थे । वहाँ के सत्संगी बोले कि हम लोग अपनी सम्पदा छोडकर आये है । यहि यहाँ पर मंदिर नही बनेगा तो हमे बच्चो को छोडकर जाना पडेगा । श्रीजी महाराज की अलौकिक लीला है । मैं भारत में भी कई बार कहता हूँ, कि विदेश में सत्संग अच्छा किया जाता है ।

दूसरी एक बात आप फोटो देखे इसमें महाराज की कृपा है । मेरा महत्व एक दम भी नही मानना है । क्योकि मैं अपराधमे आ जाउगा । हमे महाराज के विचार को समझना है । महाराज अपना प्रभाव दिखाते है । इस लिये निष्ठा बढती है । किसी व्यक्ति के लिये प्रभाव नही डालते है । यह सामान्य मजाक की बात कह रहा हूँ । मेरी

नजर टेढी है। महाराज की भी टेढी है। आप सभी को खूब धन्यवाद, शुभेच्छा के साथ विराम दे रहा हूँ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : बीते दिन जो विज्ञापन किया गया है। इस आधार पर यहाँ के हरिभक्त टोरन्टो मंदिर के लिये सहायत दिये है । उन्हे अधिक धन्यवाद अपने **I.S.S.O.** परिवार के मध्य रोज एकता है । अभी तक ४८ वर्षो में **I.S.S.O.**(की प्रगति हुयी है। यह एकता के कारण है।

यहाँ बोस्टन में २० वी पाटोत्सव के अवसर पर हरिभक्तो ने जो परिश्रम किये है। यह कठिन कार्य है। कई महीने लगा है। अरविंदभाई तथा इनकी टीम है। क्योकि एक आदमी कार्य नही कर सकता है । पूरी टीम कार्य करती है। एक-एक हरिभक्त मिलने से कार्य पूर्ण होता है।

विशेष कर सभी को धन्यवाद। कीपन तथा उसके बाहर की छोटी-बड़ी सेवा होती है। पार्किंग में खडा रहना है। यह सब मिलकर उत्सव सफल होता है।

यहाँ आकर सभी हरिभक्तो से मिलकर खुशी मिली। जैसा आप को ज्ञात है। अहमदाबाद में एक उत्सव समाप्त होते ही दूसरा उत्सव आ जाता है। २३ से २७ नवम्बर लंदन केन्टकी में प्रतिष्ठा होने वाली है। उसमे भाग लेने के लिये आप सभी आमंत्रति है। नवम्बर मे एक और प्रतिष्ठा की योजना है । वर्षो से हरिभक्तो की मेहनत से न्यूयार्क में मंदिर तैयार हो रही है। इसकी तारीख निश्चित होने पर अवगत किया जायेगा।

कुछ समय पूर्व महाराज से बात हुई थी। वह एक महत्वपूर्ण विज्ञापन करने वाले है। १९७८ में जब सर्व प्रथम **I.S.S.O.** की स्थापना की गयी तो कुछ वर्षो में विहोकन मंदिर बना था। इसके बाद अनेक मंदिर बने है। जैसे जैसे हरिभक्त भारत से आते गये । कई स्थानप र दूसरी एवम् तीसरी पीढी है। प्रतिदिन **I.S.S.O.** परिवार बढता जा रहा है । केवल अमेरिका ही नही यु.के. और आस्ट्रेलिया जहाँ पर हरिभक्त है। २०२८ में **I.S.S.O.** ५० वर्ष पूरा करने जा रहा है। यह हम सभी के लिये गौरव की बात है।

अभी जो बृद्ध बैठे है। जब ये लोग युवक थे। तब से आज तक **I.S.S.O.** को सेवा दे रहे है । ये लोग इतिहास भी जानते है। ये लोग संस्था को आगे बढाने में श्रम और त्याग किये है। **I.S.S.O.** का ५० वर्ष का उत्सव २०२८ में बड़े स्तर पर मनाना है। अमेरिका में यह सबसे बडा कार्यक्रम होगा। यह तब होगा। जब हरिभक्त सहयोग देगे। समय-स्थान एक वर्ष पहले बता देगे। इसमें सभी हरिभक्त भाग ले।

इसके बाद प.पू. लालजी महराजश्री अपने धोलका मंदिर का आने वाला ''त्योहार'' में अने के लिये सभी हरिभक्तो को आमंत्रित कर रहे है। बोस्टन मंदिर का सत्संग सदैव बढता रहे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

सत्संग के लिये

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से पूरे नरनारायणदेव देश के हरिभक्तो को ज्ञात हो कि स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) बिजापुर, झालावाड वढवाण प्रदेश तथा स.गु. शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी (कलोलवाले) राजस्थान प्रदेश दोनो संत मंडल को श्री नरनारायणदेव देश के उपरोक्त गाँवो में हरिभक्तो के सत्संग, कथा-वार्ता, नाम, धर्मादा आदि सत्संग लक्षीय क्रिया-कलाप करने की आज्ञा दिया जाता है। तो आप सभी हरिभक्त इस सेवा प्रवृत्ति में सुंदर साथ सहकार दे। यहाँ जहाँ पर प्रवृत्ति हो उसका वृतांत प.पू. आचार्य महाराजश्री को अवश्य दे।

श्री हरिनी निष्ठ सेवामां संतो-भक्तोनी विविध सेवा

अपने मन में स्वभाविक रुप से प्रश्न आता है कि भगवान श्रीहरि के समय में उनेक अनेक प्रकार की सेवा कौन किया होगा ? यह सभी सूचना श्रीमद् सत्संगिजीवन शास्त्र में है। उस शास्त्र में से आप लोगो के ज्ञान के लिये लेख रुप में प्रकाशित कर रहे है। कई लोग इस शास्त्र का अध्ययन भी नही किये होगे।

स.गु. मुक्तानंद वर्णीश्री को स्नान कराते चरण दबाते तथा बिस्तर बिछाते तथा मुख्य सेवा करते थे। दादा खाचर की बडी बहन तपस्विनी जीवुबा सदैव पवित्र होकर प्रतिदिन प्रेम पूर्वक श्रीहरि के लिये छान कर पानी लाती थी। नारायणनंद वर्णी के प्याले को भरकर श्रीहरि के पास रखते थे। संचय जल की आवश्यतानुसार श्रीहरि को देते थे । गोपालानंद नाम के वर्णी हमेशा श्री नारायणमुनि के भगवत पूजन के पात्रो को धोकर रखते थे। वासुदेवानंद नाम के नैष्ठिक ब्रह्मचारी श्रीहरि को कृष्ण पूजा के लिये चंदन धिसते थे। उमाभाई और नाथजी दोनो लोग प्रतिदिन सुगंधित पुष्प और तुलसीपत्र बाग से लाते थे। अखंडानंद वर्णी पूरे पूजा के उपहार तथा भक्तो द्वारा लायेग ये उपहारो को क्रम में रखकर श्रीहरि के पूजा समय लाकर रखा देते थे। उत्तम राजा की बहन लाडूबा धी युक्त गेहूँ का आटा, तेल, दूध, शक्कर, शाक, फल शुद्ध करके श्रीहरि को अर्पण करती थई। उत्तम राजा की तीसरी वहन पांचुबाई श्रीहरि की रसोई बनाने के स्थान को लीप कर शुद्ध रखती थी । उनकी छोटी बहन नानबाई श्रीहरि के निवास स्थान को शुद्द रखती थी। सोमादेवी तथा सुर प्रभा ये दोनो उत्तमराजा की माँ मिट्टी से लेपन करती थी । आनंदानंद और गोविंदानंद ये दोनो वर्णो श्रीहरि के होम के लिये वन में से सामिधा तथा शुभ दर्भ लाते थे । हरजीभाई तथा उकराभाई श्रीहरि के लिये बगीचे से शाक - भाजी लाकर सेवा करते थे । मयाजी भगत भोजन बनाने के लिये लकडी लाकर सेवा देते थे। रतनजी भगत रसोई के बर्तन धोते थे। हमीरजी हाथ धोंने के लिये शुद्ध मिटी लाते थे। गुमानजी प्रतिदिन दातुन लाते थे। द्विजोत्तां शिवराम श्रीहरि के पादूका की रक्षा करते थे । मयाराम विप्र श्रीहरि के वस्त्रो की रक्षा करते थे । तथा ब्रह्मचारी जपानंद श्रीहरि के वस्त्र धोकर देते थे । लाधाभाई तथा हरजीभाई पैसे का लेखा-जोखा रखते थे । श्रीहरि की सेवा मे सदैव तत्पर हेमन्तसिंह राजा पूरे गृहस्थ को अपने धर्म में रहे। ऐसा कार्य करते थे। दादा खाचर स्वयं मान छोडकर श्रीहरि की सेवा करते थे । रामदासभाई सदैव श्रीहरि के सेवा हेतु तत्पर रहते थे। प्रयागजी नमक पुरानी भोजन के बाद श्रीमद् भागवत तथा धर्मशास्तरो की कथा करते थे । नित्यानंद स्वामी तो प्रतिदिन रात्रि में श्रीमद् भगवत - भगवतगीता तथा विष्णुसहस्त्रनाम का स्त्रोत और वासुदेव महात्म की कथा पढते थे। श्रीहरि की सेवा में पत्र लिखना तथा पुस्तको का रक्षण की सेवा देते थे । महाबुद्धिशाली शतानंद मुनि श्रीहरि द्वारा लिखवाये वेद आदि का शोधन करते थे। इन्होने ही सत्संगिजीवन नाम का धर्मशास्त्र की रचना की थी । श्रीहरि महाप्रभु की हमेशा सेवा करने वाले गोपालनंद स्वामी सर्व साधुजनो को धर्मस्थापन तथा ज्ञानोपदेश श्रीहरि के आज्ञा में रहकर बताते थे । अगाध बुद्धिवाले, शास्त्रज्ञ, गायन विद्या में कुशल तथा कवि मुक्तानंद स्वामी और ब्रह्मानंद स्वामी ये दोनो श्रीहरि के प्रेम के लिये श्रीहरि के महात्म को प्रकाशित करने वाले कई प्राकृत छन्द-प्रबन्धो कीर्तनो की रचना करते थे। गायन कला की युक्तियो में कुशल, चार

प्रकार के बाद्य में निपुण प्रेमानंद मुनि श्रीहरि के गुण-चरित्र से पूर्ण प्राकृत प्रबन्ध तथा कीर्तन की रचना करते थे। प्राकृत ग्रंथी की रचना में कुशल निष्कुलानंद मुनि प्राकृत ग्रन्थ बनाते थे। तथा ध्यानानंद तथा पूर्णानंदमुनि तथा उत्तमबुद्धि वाला सुंदरजीभाई प्राकृत ग्रंत बनाते थे। दीनानाथ भट्ट नाम के कवि सत्यति श्रीहरि की प्रसन्नता के लिये संस्कृत छंद, प्रबन्ध और अष्टक की रचना करते थे। बुद्धिमान गोविंदानंदमुनि, अभेदानंद, गुणातीतानंदमुनि, शिवानंद मुनि और प्रज्ञानंदमुनि ये पांच मुनि श्रीहरि के सामने आदर पूर्वक भगवान से सम्बन्धित कीर्तनमय पद्य का गान करते थे । महानुभावानंद कमजोर शरीर वाले आत्मानंद और स्वयंप्रकाशानंद ये तीन संत कार्य करने में प्रवीण देशान्तर से आये श्रीहरि के दर्शन हेतु भक्त तथा मुनि लोग यथायोग्य आतिथ्य सत्कार करते थे । निरंजनानंद ऋषि, आत्मनिष्ठ व्यापकानंद मुनि, सुखानंद मुनि, परम चैतन्यानंद स्वामी दूसरे गोविंदानंद स्वामी और चैतन्यानंद स्वामी ये सभी उत्तमबुद्धिवाला सप्तर्षियो भगवान की वार्ताक रते थे। महाबुद्धि वाले आनंदानंद स्वामी श्रीहरि के आज्ञा से भक्ति की विधी बताते थे । भगवान के मंदिर बनवाते थे । देवराम नारायणजी और हीरजीभाई इत्यादि शिल्पी ये तीनो गृहस्थ और आधारानंद स्वामी ये श्रीहरि की चित्र-प्रतिमा बनाते थे । माहेश्वर तथा दामोदरदास स्त्रीओ की यथोचित रुकने की व्यवस्था करते थे। तपस्विनी, स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य युक्त बालयोगिनी रमा महिलाओ के सामने भगवान की कथा करती थी । कृष्णदास और राजदान दोनो नाई भक्त श्रीहरि की रात्रि के समय मशाल लेकर चलते थे । वृद्ध करीमभाई द्वारपाल का काम करते थे । सोमला खाचर, सुराखाचर, मानसिंह, केसरी सिंह, वेरोजी, अलैया खाचर भगुजी, लाखाजी, जालमसिंह, रवजी, मानजी इत्यादि शास्त्रधारी शूरवीर २०० सौ क्षत्रिय निरतंर हरि के सेवा में लगे रहते थे । मुक्तानंद आदि भक्तगण श्री नारायणमुनि परिपर्या से हृदय में मनुष्य जन्म की सफलता देखते हुए श्रीहरि के दासस्त्र करते थे । (सत्संगिजीवन प्रकरण-३, अध्याय-२)

दीपोत्सव का कार्यक्रम

चोपडा खरीदने के लिये : आश्विन वद-७ ने रविवार ता. १-११-२०२६ के दिन पुष्य नक्षत्र होने से चोपडा खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

धनतेरश : आश्विन वद-१२ शुक्रवार ता. ६-११-२०२६ धनतेरश, महालक्ष्मी पूजन।

काली चौदश : आसो वद-१३ शनिवार ता. ७-११-२०२६ कालुपुर मंदिर श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-आरती शायं ७ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण होगी।

आश्विन वद-१४ रविवार ता. ८-११-२०२६ कालुपुर मंदिरमें समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन शायं ६ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण होगा।

दीपोत्सव : आश्विन वद-३० सोमवार ता. ९-११-२०२६.

अन्नकूट दर्शन प्रात : १० बजे से ३-३० बजे

नूतनवर्ष : वि.सं. २०८३ कारतक सुद-१ मंगलवार ता. ११-११-२०२६.

मंगला आरती प्रात : ५-०० बजे
श्रृंगार आरती प्रात : ६-३० बजे
गोवर्धन पूजा प्रात : ८-०० बजे
राजभोग आरती प्रात : १०-१० बजे

श्रीहरिना ६ठ्ठे, ७ वे और ८ वे वंशज के करकमलो के द्वारा होगा।

नूतन वर्षके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर मे अपनी बैठक में सभी हरिभक्तो को दर्शन देगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले सभी भक्त अपना २ चोपडा लाल रंग के वस्त्र मे पता, फोन, मोबाईल नं. लिखकर कोठारी कार्यालय में रू।. ५००/- देकर जमा कराके रसीद प्राप्त करे ले।

धोळका स्थानी पंचतिर्थि



– शास्त्री अजयप्रकाशदास (धोलकाधाम)

वौठा : संवत १८६८ के वर्ष मे कार्तिक सुद-१४-१५ के दिन वौठा में बडा मेला (समैया) किया गया था। उसमें श्रीहरि, संत-पार्षद तथा राजा गाँव के भक्त पधारे थे। धोलका के भक्तगण पधारकर श्रीहरि के पूजा का लाभ लेकर धन्य हुए (श्रीहरिचरित्रामृत सागर पूर-१४ तरंग)

वौठा में सात नदियो का संगम होता है। वहाँ पर पधारे थे। हाथमती, माजुम, साबरमती, मेश्वो, वात्रक, खारी, शेढी इस संगम पर पधारे थे। की भक्त बडी-बडी मशाल लेकर महाराज के साथ चलते थे। यह देखकर गोस्वामी ने कहा कि, स्वामिनारायण को इतना तेल कौन दे रहा है ? और इतनी मशाले है ? श्रीजी महाराज यह सुनकर हँसने लगे। स्वामिनारायण के लिये यह सब कुछ समर्पित करने के लिये तत्पर है। स्वामिनारायण का आज्ञा पालन करते है।

कृपालु श्रीहरिने संगम स्थान पर स्नान करके शिवजी को जल चढाये थे। महादेव के पूजारी की गरीब हालत देखकर महाराज अपने हाथ का सोने का कडा पहना दिये।

इस वौठा में नंद संतो के साथ महाराजने महादेव की पूजा किये है। यह धोलका से मात्र १५ की.मी. दूर है।

भायला : संवत १८६१ के वर्ष मे श्रीहरि, संतो-पार्षदो के साथ सियाल से चलकर काणतोर – राणोसर होकर भायला पधारे थे। वहाँ पर दर्शन का सुख देकर वहाँ से भात होकर अहमदाबाद पधारे थे। (सद्. श्री प्रसादानंद स्वामी की बात-विश्राम-१३)

स.गु. महानुभावानंद स्वामी कुवाँ पर पानी पीने जा रहे थे। तब राजपूत तथा लोहाणा परिवारने कहा कि आप नमकीन पानी मत पीये। नमकीन पानी लोगो को दिये तो मीठा लगा संतो को गाँव में बुलाकर सम्मान किया गया। महानुभावानंद स्वामीने गाँव में बड़ा मंदिर बनवाये। बगल में भीडभंजन हनुमानजी की स्थापना किये। आज भी सभी का कष्ट दूर करते है। यह भायला गाँव धोलका से २६ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

कोठ : वि. संवत १८७८ के वर्ष मे अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा करके तथा कांकरिया भूदेवो की चौरासी करके असलाली, जेतलपुर पधारे। वहाँ से धोलका आये। वहाँ पर एक आश्चर्य हुआ कि वहाँ पर रायचंद नामक व्यापारीने कहा कि यह तेजोमय शरीर श्री स्वामिनारायण भगवान का आश्रय लो। अन्नत लोगो के कल्याण करने वाले साक्षात् भगवान है। यह कहते हुए शरीर का त्याग किये। तथा अक्षरधाम को प्राप्त किये। इस प्रकार सर्वोपरि भगवान श्री सहजानंद स्वामी महाप्रभु धोलका नगर में सभी को अद्भूत प्रभाव बताकर वहाँ से गणपति के मंदिर में गये। रायडो में गणेशजी की स्थापना करके वहाँ पर रुक गये। कोठ में १३ बार श्रीहरि पधारे थे। कोठ धोलका से १३ कि.मी. दूर स्थित है।

जवारज : संवत १८७८ के वर्ष मे श्रीहरि संत-पार्षदो के साथ गढपुर से निकलकर करियाणी, कुंडल, चोकडी, पच्छम, सरगवाला गाँव में आये। वहाँ से भोगवो नदी पार करके भक्तो के चित्त को चुराने वाले श्रीहरि आगे

आये। वहाँ पर सुरा खाचर ने पूछा आज भोजन कहाँ प्राप्त होगा। तब श्रीहरिने कहा आज की का गाँव के सिवाय कही भी भोजन नही मिलेगा। इस प्रकार मजाक करते रास्ते पर चले जा रहे थे। रास्ते में जब जवारज गाँव आया। तब महाराज अपने अश्व की लगाम ढीली कर दिये। घोडे को अपने अनुसार आगे बढने दिये। कुछ समय के बाद अश्व रुक गया। उस समय क्षत्रिय बहने भात लेकर खेत की तरफ जा रही थी। पुरुष खेत में गेहूँ की वुवाई हेतु गये थे। श्रीहरिने क्षत्रिय बहनो से भोजन की माँग किये। श्रीहरिने कहा हम लोग आप के गाँव के मेहमान है। केवल दो-दो रोटी दे दे। हम लोग खाकर आगे जायेगे। स्वामिनारायणने कहा मैं स्वयं हूँ। तथा काठी दरबार लोग है। बहनोने कहा कि हमारे गर में घी और गुड अधिक है। ब्रह्मचारी ने घी में आटा मिलाकर हलवा बना दिये। श्रीहरिने भोग लगाया। तथा काठी दरबारो को रोटी-घी दही देकर भोजन कराये। जवारज में सभी काठी दरबारो को भोजन कराके श्रीहरि तुरंत निकल गये। (श्रीहरिचरित्रामृत सागर पूर-१९, तरंग-३६-३७)

आधार बारोट का घर प्रसादी का है। पत्थर की घंटी प्रसादी है। श्रीहरि यहाँ पर १५ बार पधारे थे। धोलका से लगभग ३७ की.मी. दूरी पर है।

चलोडा : संवत १८६७ के वर्ष मे श्रीहरि ने जेतलपुर में बडे यज्ञ के लिये काफी सामान लाये थे। यज्ञ बंध कराने के लिये पेशवा के सैनिक आये थे। यह अर्न्तयामी श्रीहरि को ज्ञात हो गया था। भक्तो से बोले आप सभी झगडा मत करना। सेना आये लूट करे तो करने देना। यह कर श्रीहरि वहाँ से चले गये। तो चलोडा गाँव में आये। यहाँ पर सेना आई। श्रीहरि को खोजे। अन्ततः सेना निराश होकर वापस चली गयी। चलोडा गाँव के पाटीदार हाथ में नारियल फूल लेकर सभी ने दण्डवत प्रणाम किया। श्रीफळ लाये थे। वह श्रीहरि के हाथ में रख दिये। फूलहार को पहनाये। हाथ में पुष्प गुच्छ देकर अलौकिक लाभ लिये।

ढोल-नगारे की ध्वनि के साथ श्रीहरि को गाँव में लाये। गाँव के सभी लोग आकर बाजार में खडे हो गये। दोनो हाथ जोड कर पैर पकडने लगे। गाँव के लोग दर्शन का लाभ लेकर तृप्त हो गये। गाँव में जीव का घर था। वहाँ पर रुके। घर पर बैठकर महाराज भोजन किये। वही पर शयन भी दिये थे।

मंदिर के पीछे जीतबा का घर है। वहाँ पर वरदान दिये कि जो इसके नीचे से प्रसार करेगा। उसका हम कल्याण करेगे। माढ दर्शनीय है।

चलोडा में श्रीहरि १३ बार आये थे। चलोडा गाँव धोलका से ९.५ की.मी. की दूरी पर स्थित है।

केवल धर्मादा के लिये QR Code



अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव के कोठार में अपना दशांश-विशाश धर्मादा के लिये यह QR Code है। जो मात्र धर्मादा के लिये है। सभी हरिभक्त ध्यान दे।

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર ધોળકાધામ બિરાજમાન શ્રી મોરલીમનોહરદેવ શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજનો

૨૦૦ વર્ષ દ્વિશતાબ્દી મહોત્સવ

ત્યોહાર ધોળકા

6 to 10 January 2027



વળી ધોળકે મંદિર રળાવી રે, તેમાં મૂર્તિ સારી પધરાવી રે,
એવો કરિયો એહ ઉપાય રે, જેણે કરી ત્યાં સુખી થાય રે
મોરલી મનોહર હરિકૃષ્ણ રે, પોતે શ્રીજી થઈ અતિ પ્રસન્ન રે,
જીવ સનંત ઉદ્ધારવા કાજ રે, આવ્યા ત્યાં ઘણી વાર લઈ રાજ રે

પુરુષોત્તમપ્રકાશ - ૩૩



ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ મહાપ્રભુએ સ્વહસ્તે નવ મંદિરો કર્યા તેમાં સાતમાં ક્રમે ધોળકાધામમાં સ્વહસ્તે મંદિરમાં શ્રીમોરલી મનોહરદેવ હરિકૃષ્ણમહારાજની સ્થાપના કરી તેને ૨૦૦વર્ષ પૂર્ણ થઈ રહ્યા છે.
શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધૂ.૧૦૦૮ આચાર્ય કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના આશીર્વાદથી તથા ભાવિ આચાર્ય પ.પૂ.૧૦૮ શ્રી વૃજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના અધ્યક્ષપદે દ્વિશતાબ્દી ત્યોહાર મહોત્સવ ધામધુમથી ભવ્યાતિભવ્ય ઉજવાશે.

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક એવમ્ સામાજીક વિવિધ આયોજન

- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર ૨૦૦ મિનિટની ધૂન
- ૨૦૦ પ્રદક્ષિણા કરવી ધોળકાધામની પદયાત્રા કરવી
- દર મહિનાની પૂર્ણિમાંએ ધોળકાધામ દર્શન કરવા આવવું
- વૃક્ષારોપણ બ્રહ્મભોજન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ
- મંત્રલેખન બુક
- ભવ્ય પુષ્પ અભિષેક
- પદયાત્રા
- સમૂહ વંદુ સહજાનંદના પાઠ
- દર એકાદશી તેમજ પૂનમના દિવસે
- સમૂહ જનમંગલપાઠ સવારે
- વચનામૃતના પાઠ
- ઘર મહાપૂજા
- સમૂહ મહાપૂજા
- દર શનિવારે સુંદરકાંડના પાઠ ધોળકાધામમાં
- ભક્તચિંતામણીના પાઠ
- ગામડે ગામડે ગ્રામ્ય સત્સંગ સભા
- સોસાયટીમાં સત્સંગ સભા
- જરૂરિયાતમંદને અનાજ - કીટ વિતરણ
- વૃદ્ધાશ્રમોમાં ભોજન વિતરણ
- દર મહિનાના છેલ્લા રવિવારે મંદિરમાં સત્સંગ સભા
- દર એકાદશીએ મહિલા સત્સંગ સભા
- શ્રીમદ્ ભાગવત્ પારાયણ
- શ્રી મહાવિષ્ણુયાગ
- મેડીકલ કેમ્પ
- શ્રી સ્વામિનારાયણ બીજ મંત્ર હોમાત્મક અનુષ્ઠાન યજ્ઞ

યજમાન બનવા / સેવા નોંધાવવા સંપર્ક : 9879370457

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - ધોળકા (મુખ્ય)

ફાયર સ્ટેશનની બાજુમાં, જી.અમદાવાદ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,અમદાવાદ ઝોન



ठाकुरजी की सेवा विधि में महत्वपूर्ण विवरण

– जी. वी. सीतापरा (अहमदाबाद)

प.पू. बड़े महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद की प्रेरणा से

भगवान या भगवान के अवतारो के स्वरुप जब पृथ्वी पर मानव रुप धारण करके विचरण करते है। उस समय पर जिस प्रकार से परमात्मा की सेवा पूजा करते है। उसी प्रकार हम ठाकुरजी की पूजा-अर्चना करते है। उसे प्रत्यक्ष कहते है। अपने मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय में श्रीहरि के बचन से ठाकुरजी के मूर्ति स्वरुप में सदैव प्रगट बिराजते है।

धर्मवंशी आचार्यश्री अपने धर्मगुरु है। आप के ठाकुरजी के साथ मन मिलाप होता है। उसके कई प्रसंग में सम्प्रदाय मे सुविदित है। इस लिये इस विधी को सभी जाने। उनके रुची के अनुसार ठाकुरजी की सेवा करेगे तो अपने उपर ठाकुरजी की विशेष कृपा बनेगी। यह निश्चित बात है।

तो आईये, इस लेख के माध्यम से कई महत्वपूर्ण विवरण पढे।

ठाकुरजी के स्वरुप जैसे गणपति-हनुमानजी आदि जो प्लास्टिक या रंग-बिरंगे कृत्रिम फूलो से हार नही चढाये। यदि शुद्ध फूल न मिले तो वैसे ही रहने दे। सूखे मेवे के माला में कृत्रिम फूल न रखे। इसमें रसायन मिला रहता है। जो अशुद्द होते है। अपवित्र हार ठाकुरजी को नहि पहनाये। प्राकृतिक फूल मे सुगंध होती है। कृत्रिम मे नही होती है।

विशेषकर वासी (मोगरा का फूल तथा माली के घर रहा पुष्प वासी नही माना जाता है।) सूखा, जमीन पर रखा, स्मशान के पास उगा किसीने सूंघ लिया हो। किसी देवता पर चढा, गंदा उसी प्रकार धतुरा-आँकडा तथा अमान्य पुष्प से ठाकुरजी को नही चढाये। चम्पा और केतकी के फूल से शिव की पूजा नही करें।

ठाकुरजी को पेन्ट, शर्ट, बेल्ट, चश्मा, पुलिस का ड्रेस, क्रिकेट का ड्रेस आधुनिक कपडे नही पहनाना चाहिए। ठाकुरजी को चमडे की वस्तु नही चढाना चाहिए। माताजी को चमडे का पर्स नही चढाना चाहिए।

श्रीहरि कई बार कुर्सी पर बैठे रहते है। उनके आगे कृत्रिम पैर तथा मस्तक पर बाल की जटा नही लगाये। इससे ठाकुरजी की मर्यादा भंग होती है। तथा वह अपवित्र हो जाता है।

राधिकाजी, लक्ष्मीजी इत्यादि माताजी के स्वरुप को कृत्रिम बाल तथा आधुनिक विग मस्तक पर शोभा नही देता है।

राधिकाजी, लक्ष्मीजी इत्यादि माताजी के स्वरुप को कृत्रिम बाल तथा आधुनिक बिग मस्तक पर शोभा नही देता है।

शुद्ध इत्र का प्रयोग ठाकुरजी के लिये प्रयोग करना चाहिए। ईत्र में कई बार रसायनो का प्रयोग होता है। जो ठाकुरजी उपर पपडी बना देता है। शुद्ध चंदन का तेल लगाना चाहिए। सेन्ट मे अल्कोहल की मात्रा होती है। यह सेन्ट कभी भी ठाकुरजी के वाधा-वस्त्र पर नही लगाना चाहिए। तथा शीशी को चढाये भी नही।

ग्रीष्म ऋतु मे जब चंदन का वाधा किया जाता है। तो मैसुर का शुद्ध चंदन होता है । चंदन को धिसकर विश्वास होने पर लगाया जाता है। ठाकुरजी को शीतलता प्रदान करके अन्यथा तैयार चूर्ण लाकर यदि चंदन का वाधा करना हो तो मूर्ति पर पतला सूती या मलमल का वस्त्र रखकर चंदन का वाघा करना चाहिए। तैयार चंदन मे रंग मिलाया जाता है। यह रसायन होने के कारण मूर्ति पर क्षार बना कर परत बना देते है। अधिक क्षार लगने से मूर्ति खण्डित हो जाती है। इसमें ठंडक भी कम होती है। प्राधः माथे पर आप देखे तो वहाँ पर काला हो जाता है। इसी प्रकार यह चंदन ठाकुरजी को कैसे सुख प्रदान करेगा।

ठाकुरजी की मूर्ति के उपर झबक-झबक करने वाली लाईट नही करना चाहिए। दक्षिण भारत के मंदिर में ठाकुरजी गर्भगृह मे दीपक जलाकर प्रकाश किया जाता है। हमे मध्यम मार्ग का पालन करना चाहिए।

रंग-बिरंगे फलो के रस से ठाकुरजी का अभिषेक नही करना चाहिए । तैयार फल के रस मे मिलावट की पूरी संभावना होती है।

ठाकुरजी को पत्थर और प्लास्टिक के खेल साधन नही चढाना चाहिए।

हिंडोला उत्सव में शास्त्र प्रमाणित मूल सम्प्रदाय के धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा मान्य ठाकुरजी के लिये चल स्वरुप मे हिंडोला चढाना चाहिए। प्रत्येत विषय में ठाकुरजी को खुश रखने का भाव रखे । दर्शनार्थी के खुशी के लिये दिखावा नही करना चाहिए। सिलिकान या फाईबर की मूर्तियाँ नही रखना चाहिए।

हरि मंदिर में विशेष रुप से गाँव के गृहस्थ पूजारी जब ठाकुरजी की सेवा करे तो स्नान करके शुद्ध होकर करे। क्योकि श्रीहरि लीलामृतम के हिसाब से होना चाहिए।

धर्मी भला पूजक होय जहाँ,
रहे तहाँ दैवत देवमांय,
अधर्मी नो स्पर्श थकी जरुर,
देवो तणु दैवत जाय दूर
अधर्मी नो स्पर्श अशुद्ध लागे,
चांडाल से ब्राह्माण जेम भागे
कामी रसास्वादि हरामी सेवे
ते मूर्ति मां वास वसे न देबे ?

शायं के नियम चेष्ठा करके महाराज को शयन कराना चाहिए।

सत्संगि के घर मे ठाकुरजी का सिंहासन सत्संगि बड़ी समझदारी, सत्संग, निष्ठा, भक्ति-भाव का निश्चय दर्शन करता है । सिंहासन हरिभक्ते के उपासना का प्रतिबिंब होता है । सिंहासन मे ठाकुरजी श्रीहरि के हमे स्वरुप को रखे। कही गये वहाँ से लाकर सिंहासन पर रख दिये । यह अच्छी बात नहीं है । अपे घर पर विराजमान ठाकुरजी का समय-समय पर सभी कर्म करे । यह कार्य मात्र बहनो के उपर नही छोडे । भाई लोग भी लाभ ले । क्योकि अम्बरीष का उदाहरण देखे तो,

श्रीमंत राजा अति अंबरीष,
स्वहस्त्र सेवा करतो अधीश,
एवीज श्रद्धा उर होय जेने,
सेवा तणो दे अधिकार तेने

अंत में किसी व्यक्ति या मंदिर के उपर यह लेख नही है। यह हम सभी के लिये उपयोगी लेख है। मंदिर में जो लोग ठाकुरजी की सेवा करते है। वे सभी भाग्यशाली है। इस अवसर का लाभ ले। अस्तु जयश्री स्वामिनरायण

ठाकुरजी के अन्नकूट के विषय में

ठाकुरजी के अन्नकूटोत्सव आश्विन वद-३० ता. ९-११-२०२६ सोमवार के दिन है।व्रत और उत्सव का निर्णय उपर लिखित है। लेकिन दड्डा-कैलेन्डर मे शर्त चूक से कार्तिक सुद-१ है। जो गलत छप गया है। इससे सभी सत्संगी ध्यान दे।

-शास्त्री अजयभाई

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-सितम्बर-२६

ता. ६-०९-२०२६	(प्रातः ७ बजे) प.भ. योगेशभाई अमृतलाल भावसार - नवा वाडज ।
ता. ६-०९-२०२६	(प्रातः ११ बजे) श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - कांकरोल (हिम्मतनगर) ।
ता. १०-०९-२०२६	श्री महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर - नवा वाडज ।
ता. १४-०९-२०२६	प्रसादी के श्री गणपतिजी की सामुहिक पूजा
ता. १५-०९-२०२६	प.भ. साहिल अनिलकुमार पटेल - उनावा
ता. १९-०९-२०२६	प.भ. भावनाबेन राजेशकुमार पटेल - घाटलोडिया ।
ता. २०-०९-२०२६	प.भ. किरणभाई गोविंदभाई पटेल - घाटलोडिया ।
ता. २१-०९-२०२६	प.भ. जयश्रीबेन चंदूभाई पटेल - उस्मानपुरा ।
ता. २९-०९-२०२६	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - एप्रोच-बापूनगर ।

प्रसादी के हनुमानजी की समूह पूजा तथा अभिषेक

श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्वयं पूजित होल नं. १ मे स्थापित प्रसादी के हनुमानजी का समूह पूजन तथा अभिषेक का आयोजन ता. ७-११-२०२६ शनिवार के दिन प्रातः ८-३० बजे किया जायेगा । पूजा तथा अभिषेक का लाभ लेने के ईच्छुक हरिभक्त आफिस में सम्पर्क करे ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "पूर्ण निराकुलता कब प्राप्त होगी"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

सभी लोगो का अधिक मास का उपवास और नियम यह कैसे चलता है। उपवास का सही अर्थ है कि दसो इन्द्रियो और मन को जीतना। हलवा-पूडी, शाक, पापड इस प्रकार दस व्यंजन को खाकर उपवास नही करते है। उपवास के दिन यदि नही रह सके तो एक पदार्थ खाकर रहना चाहिए । ईन्द्रियो को जीतने के लिये उपवास करते है। किसी ईच्छा के बिना उपवास करना चाहिए। हमारे अंदर ईच्छा जागृत हो ही जाती है। मुझे कुछ करने कप रकुछ मिल जाये तो अच्छा है। ईच्छा नही रखने का भी कारण है ? ईच्छा ज्ञान का हरण कर लेती है। ज्ञान के उपर आवरण ला देती है। अज्ञानता मानव को भटका देती है। कभी ऐसा लगता है कि यह ईच्छा कैसे भी पूरी होनी चाहिए। इससे मानव दु:खी हो जाता है। प्राय: वह ठगा जाता है। लोग सामने वाले का दुरुपयोग करने लगते है। ऐसी तीव्र कामना कब आती है ? विषय वस्तु को साथ देखकर होती है। ईच्छा का मुख्य कारण 'मोह' मोहका कारण पंच विषय है। जब तक रमणीय पंथविषय मे चित्त लोभित होता है। तब तक मोह समाप्त नही होता है। मोह-विषय मे आसक्ति के कारण आती है। सत्य ज्ञान का अभाव मूल है। हमारी सभी ईच्छाये पूरी नही होती है। हम सभी भगवान से माँगते है जो योग्य होता है वही भगवान हमें देते है। नारद भगवान को शादी करने का मोह हुआ था। भगवानने कहा ''जो मेरे हित मे हो वह ईच्छा पूरे करे। भगवानने कहा ''जिस में आप का परम हित होगा वही मै करुगा। भगवान सभी कामना पूर्ण नही करते है। मानलो अपनी कोई ईच्छा पूरी हो गयी तो क्या होता है। दूसरी ईच्छा आ जाती है। यह सभी को ज्ञात है। ईच्छा ये कभी पूरी नही होती है तो क्रोध जन्म लेता है। क्रोध से मानव भ्रमित हो जाता है। विवेक रहति मोह पैदा हो जाती है। इससे बुद्धि का नाश हो जाता है। इससे मानव का विनाश होता है। मानव विषयारत हो जाता है। भक्ति करना छोड देता है। नास्तिक लोग भगवान को नही मानते है। तो भी अच्छे से जीते है। उनके पास सब कुछ होता है। यह हम देखते है। और कहते है कि उसके उपर भगवान की कृपा है। यह देखकर हमे लगता है कि मंदिर जाने तथा पूजा करने से लाभ क्यो नही मिलता है। यह नही चाहिए। उसके पास पूर्व के संचित कर्मो का फल मिल रहा है। इस जन्म का फल आने वाले जन्म मे प्राप्त होता है। इस पृथ्वी पर सभी भगवान के संतान है। परमात्मा न्याय स्वरुप है। सभी को न्याय देते है। किसी का अच्छा देखकर ऐसा नही सोचना चाहिए। हमें अपना देखना चाहिए। हमें जो उसकी सम्पत्ति दिखाई देती है। उसके परिश्रम का है। हम देखते है कुछ लोगअथक कार्य करते है तो भी फल नही प्राप्त होता है। इसका उनके प्रारब्ध मे नही है। कुछ लोग कम मेहनत पर अच्छा लाभ प्राप्त कर लेते है। जिस पर प्रभु की सच्ची कृपा होती है। उसे सत्संग मिलता है। जो जीव भगवान के शरण में आ जाता है। और भजन-भक्ति करता है। भगवान उसे सम्याजाल मे करना देखकर दया करते है। भगवान सोचते है कि यह जीव साधन कर रहा है। वह देखकर उसे सत्संग प्रदान करते है। सत्य मानव का साथ देते है। सत्संग का सच्चा अर्थ क्या है। भगवान के सद्‌गुण, भगवान का स्वरुप, भगवान का स्वत्राव, प्रभाव भगवान की प्राप्ति मे क्या बाधक है। यह चर्चा सत्संग मे होती है। भक्ति मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा अभिमान है। मायापति का चिंतन करने से अभिमान से मुक्ति मिलती है। सत्संग मे भगवान के गुण अनंत है। अपार है। यह सब सुनते-सुनते भक्त के मन में आ जाता है। तब भक्त को पचा चलता है कि मेरे अंदर जो गुण है। भगवान के चरण

रज के अणु के समान भी नही है। इससे सत्संग से अहंकार समाप्त हो जाता है। सत्संग का महत्व समझ मे आता है। तब उस शरणागत भक्त का धीरे धीरे भगवत प्राप्ति होने लगती है। परमात्मा अंशी है और हम लोग उसके अंश है। इस लिये हम उनके तरफ खिंच जाते है। पृथ्वी अंश की वस्तु को उपर फेकने पर वह पृथ्वी पर आती है। इस प्रकार वायु, अग्नि, आकाश तत्व वह उपर जाता है। जिसकी को प्रकृति होती है हम उस तरफ खिचते चले जाते है। हम आत्मा है। आत्मा परमात्मा नही बन सकती है। लेकिन परमात्मा के साधर्म्यपना को प्राप्त करता है। ऐशी शक्ति आत्मा के पास होती है। वह हम स्वयं ही है। अपना सत्य स्वरुप आत्मस्वरुप है। इस लिये हम परमात्मा की तरफ सहजता से खिच जाते है। ज्ञान होने पर व्यक्ति परमात्मा की तरफ खिच जाता है। अज्ञान से जीव माया से बैठा रहता है। जैसे जैसे ज्ञान बढता है। वैसे जीव (आत्मा) परमात्मा की तरफ खिंचता है। हम कितना भी कर्म करे फिर भी व्याकुल रहते है ? अज्ञानता के कारण व्याकुलता बढती है। अंशी के पास जीव नही पहुँचता है। जब परमात्मा के पास चला जाता है। तब सम्पूर्ण निराकुलता प्राप्त होगी। भगवान का इस संसार में अवतार धारण करने का कारण धर्म स्थापना ही है। असुरो का विनाश करना है। दया, क्षमा, कृपा, करुणा ये गुण है। यह परमात्मा का सबसे बड़ा गुण है। उनके पास धाम में जो मुक्त है। वे दिव्य स्वरुप में है। उन पर यह गुण नही रख पाते है। इस कारण से वहाँ मुक्त बिराजमान है। हमे अध्यात्म के मार्ग पर चलता है। हम हट न जाये। अपना रास्ता बदल नही जाये। ऐसा बल भगवान दे अपनी व्याकुलता शीघ्र पूरी हो। हम जल्दी अंशी के पास पहुँच जाये।

●

अहम का भव

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

भगवान श्री स्वामिनारायण ने वचनामृत गं.अ. ३९ मे सुंदर रुप से समझाये है। इस जीव को मात्र दो बात सिखना है। और दृढ करना है। एक स्वयं का स्वरुप ज्ञान तथा दूसरा भगवान का महात्म्य समझना है। अनादिकाल से यह जीवात्मा मायावी संस्कृति के साथ जुडी है। माया के कारण जीवात्मा को शरीर के प्रति अहंबुद्धि तथा देह के बाद ममता बुद्धि जुडी रहती है। माया को टालकर भगवान से प्रेम करे। यह शास्त्र का सिद्धान्त है। यही समझना है। अब आत्मा सम्बन्धी आत्मज्ञान अर्थात् अपने आत्मा के गहरी निष्ठा, अपने स्वरुप का ज्ञान, मै शरीर नही अविनाशी आत्मा है। यह संज्ञानता देह भाव छोडकर आत्म भाव लाती है। कई प्रकार की शरीर है। यह शरीर आत्मा का वाहन है। आत्मा उसका सारथी है। फिर भी अहंता देहाभिमान के कारण मनुष्य स्वयं देह रुप होकर सारे कार्य करने लगता है। इस प्रकार सुख दुःख हानि लाभ, शोक-हर्ष इत्यादि मे भटक जाती है। और मोक्ष मार्ग का अनुसरण करती है। वचनामृत में सर्व दोषो का मूल रुप देहाभिमान अर्थात् शरीर हूँ ऐसी भावना बताता है। आत्मा शक्ति को भूल गये।

हुँ हुँ करी हाले घणुं, अहं ममत अपार
हुँ मारु माने सही, एह जाणो अहंकार

एक अच्छी बात है। एक छोटा गाँव है। इसमे नव्य मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा विधी का कार्यक्रम था। भगवान की मूर्ति का वरघोडा के रुप मे मंदिर लाना था। तब उस गाँव का सेवा भावी तुम्हारा की ईच्छा हुई। मूर्ति को मंदिर ले जाने की सेवा दूँ। पहले के समय में वजन ले जाने के लिये बैल गधे का उपयोग होता है। सेवा भावी कुम्हार मे कोठारी से बात किया कि मै अपने गधे पर भगवान की मूर्ति सही सलामत ले जायेगे। कोठारी ने हाँ कह दिया। कुम्हारने गधे को सजा रहा था। उसके उपर भगवान को बैठाया। बस आज तो भगवानने गधे को अपना वाहन बनाये है। उल्लास पूर्वक गाजे-बाजे के साथ वरघोडा निकाला। जैसे जैसे गाँव वालो को पता चला कि भगवान की मूर्ति आ रही है। गधे की क्या भाग्य है। सभी लोग मूर्ति को प्रणाम करने लगे। भाव से दर्शन करते। कोई रास्ते मे दष्टवत करते थे। कोई फूल-चावल-चंदन से

मूर्ति को सजाये । सभी लोग श्रद्धापूर्वक आदर सम्मान से देख रहे थे ।

अपना अहोभाग्य भगवान आज मेरे पीठ पर सवार है । गधा अभिमान से रुआब मे रहने लगा । लोग दर्शन कर रहे है । दण्डवत प्रणाम कर रहे है । मेरी पूजा कर रहे है । ऐसी समझ कर मन मे गर्व करके चल रहा था ।

ऐसे मे वहाँ से एक गाय निकली । अर्थात् गधा भाई ने अहंकार से बोला ''ये गाय हटो लोग मेरा दर्शन कर रहे है । गाय धीरे से बोली आप क्यो गर्व कर रहे हो ? क्या ये लोग तुम्हारे दर्शन को आ रहे है ? गधे ने कहा हा, हा, तो क्या ? तुम्हारा दर्शन करने आ रहे है क्या ? गाय ने कहा हमारे पीठ पर तो तैतीस करोड देवता का वास है । फिर भी मुझे तुम्हारे जैसा घमंड नही है । अरे लोग तुम्हारा दर्शन नही कर रहे है । तुम्हारे पीठ पर बिराजमान भगवान का दर्शन करते है । केवल मंदिर से सीढी तक धंड रखी । मंदिर आने पर तुम्हारे पीठ से भगवान उठा लिये जायेगे । इसके बाद क्या होगा ? खराब धमंड मत करो । मंदिर आने पर गधे के उपर से मूर्ति लेली गयी । इसके बाद उसका मालिक दो-चार डंडे मार कर अलग कर दिया । भाग कर गधा गाव में गोबर खोदने लगा ।

समझने जैसी बात है । स.गु. निष्कुलानंद स्वामी (चौसठ पदी मे से) कहते है ।

जेने गण्यो पोतामां गुण जाण्यो,
हुं पण छठ कोई काम नो रे.
त्यारे मण्यो माया ने भाग,
खरो करवा खुवार रे.

स्वयं मे माल है यह नाम ही माया है । लिखकर एक दो तीन अंक से क्या ? केवल कागज काला होगा । उसी प्रकार प्रभु परमात्मा को छोडकर कोई दूसरा कार्य करे तो उसका अर्थ क्या ? उसे तो उस गधे की तरह कार्य करना है । लाख चौरासी योनि मे भटकना है । पुनः यमराज के हाथ का शिकार होना है । वर्षा विहीन बादल का क्या महत्व ? फूटे मटके के का क्या महत्व । उसी प्रकार आत्मा परमात्मा के बिना मानव का कोई मूल्य नही है ।

●

हिमालय सफेद पर्वत

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

(श्रीहरि वन विचरण गतांक से प्रारम्भ)

सुबह होते ही वर्णीराज चलने की तैयारी कर दिये । हनुमानजी महाराज कहते है कि प्रभु सेवा मे आये । तब वर्णीराजने कहा जब आवश्यकता होगी तब बुलायेगे । यह सुनकर हनुमानजी अदृश्य हो गये । हिमालय की तरफ वर्णीराज बढने लगे । बद्रिकाश्रम से जब वर्णीराज विदा हुए । तब नारायण ऋषि हिमालय से बोले बाल घनश्याम खुले शरीर और नंगे पाँव से अकेले जा रहे है । अर्थात् किसी प्रकार का दुख नही मिले । ऐसी रक्षा के लिये जाये ।

हिमालय की शोभा में कदम, आम, ईमली के वृक्ष तथा हिमशिला देखते देखते आगे जा रहे थे । वहाँ पर दो सामने पहाड आ गये । जाने का रास्ता नही था । वर्णीराज रुके रहे है अब कैसे आगे जाये । तभी हिमालय मूर्तिमान होकर सामने खडे हो गये । साष्टांग दण्डवत किये और बोले मेरे उपर कृपा करके पवित्र करने आये है। आज मेरा जीवन धन्य हो गया । उनके हाथ में चमकता भाला और प्रचण्ड रुप था । आप को कहाँ जाना है ? पूछते है । तब वर्णीराज ने कहा उत्तर की तरफ जाना है । हिमालय ने कहा सामने वाली गुफा मे जाये । यह बताकर हिमालय अदृश्य हो गये । अनंत ब्रह्मांडो को मार्ग बताने वाले क्या रास्ता भूले ? वर्णीराज बता रहे है कि संसार में मार्ग भूलो तो परमेश्वर या संत से रास्ता पूछो । दूसरे से नही । सही रास्ता मिलेगा ।

इस हिमलाय पर्वत पर कई गुफाए है । इस में आज भी तपस्वी तप करते है । सोना की खदान, अनेक जडीबूटी इस पर्वत पर है । कई प्रकार के फूल, पारीजात, मोगरा, गुलमोहर, केवडा तथा समरी गाये कस्तुरी मृग ऐसे पशु पर्वत पर रहकर सुख प्राप्त कर रहे है । ऋषि-मुनियों का तो यह पर्वत घर है । निष्कुलानंद स्वामीने हिमालय का वर्णन सत्संगिजीवन में कई प्रकार से किये है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उल्लासपूर्वक मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रावण वद-८ श्री कृष्ण जन्माष्टमी ता. ४-९-२०२६ के दिन उल्लासपूर्वक मनायी गयी। इस अवसर पर निज मंदिर के प्रसादी चौक मे सुंदर प्रकाशित शामियाना मे रात्रि को ९ से १२ बजे तक अपने कीर्तनकार गवैया भक्ति, रास गरबा सम्प्रदाय के मर्यादा में रहकर भाई-बहनो ने किया था। रात को १२ बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव भव्यरुप से मनाया गया था। हजारो हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए। अंत में पंजीरी का प्रसाद वितरित किया गया था। महंत स्वामी के सूचना से संत मंडलने अच्छा आयोजन रखे थे।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में श्री गणपतिजी की स्थापना - श्री गणपतिजी का वरघोडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे भाद्र पक्ष-४ को श्री गणेश चतुर्थी को श्री नरनारायणदेव के समक्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने श्री गणेशजी की विधिवत रुप से स्थापना करके पूजा आरती कीये थे।

भाद्र पक्ष सुद-११ जलझीलनी एकादशी ता. १२-९-२०२६ के दिन श्री गणपति विसर्जन का वरघोडा के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी आदि संत और श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल नारायणघाट तक गये थे। वहाँ पर शायं काल में ओच्छव मंडल सुंदर नंद संतो द्वारा रचित पदो को गाये थे। पवित्र साबरमती नदी मे ठाकुरजी को नौका विहार कराया गया था। हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में भाद्र मास की पून सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मे श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में भाद्र सुद-१५ पुनम को ता. २६-९-२०२६ के दिन प्रसादी के सभा मंडप में अलौकिक सत्संग सभा का आयोजन हुआ था। इस के यजमान एक हरिभक्त परिवार ने लाभ लिया था।

कथा श्रवण शास्त्री स्वामी सुव्रतदासजी ने किया था। अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी के सूचनानुसार अच्छा प्रबन्ध किये थे। हजारो दर्शनार्थी कथा श्रवण करके दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए थे। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) हिंडोला उत्सव और समूह महापूजा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी की प्रेरणा से और विशेषकर महिला मंडल की श्रद्धालु और उत्साही बहनो के पुरुषार्थ से अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक ठाकुरजी का हिंडोला उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

बहनोने कैनवास के मजबूत कपडे पर रेशमी पतले धागे से अहमदाबाद से श्रीहरि की लीलाओ को रेखांकन तथा पेन्टिंग करके, कीर्तनो मे से लीला की पंक्तियाँ लिखकर पूरे मंडप की दीवाल पर सजाई थी। उत्सव मंडप को साकार करने के लिये युवकोने सहायता दी थी। ता. ३१-७-२०२६ के दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री पधारकर अपने करकमलो से हिंहोला उत्सव प्रारम्भ किये थे।

हीर का हिंडोला तथा प्रतिदिन नया कलात्मक हिंडोला भक्तजन ठाकुरजी को झुलाने के लिये लाते थे। जी.टी.पी.एल. निर्माण न्यूज चैनल आकर मंदिर के कोठारी तथी बहनो के मुख से इस हिंडोला की विशेषता तथा महिला की रिकोर्डींग करके प्रसारण किये थे।

ता. ३०-८-२०२६ के दिन ''त्योहार'' के उपलक्ष्य श्रावण मास पर समूह महापूजा तथा भोजन प्रसाद का आयोजन किया गया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, हर्षदकोलोनी में भी प.भ. दासभाई की प्रेरणा से कई कलात्मक हिंडला तैयार करके ठाकुरजी को झूलाया गया था।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा सत्संग सभाये

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के संतो द्वारा निम्नरुप से सभा की गयी थी।

ता. ६-९-२०२६ जीवराजपार्क मंदिर, ता. १३-९-२०२६ जीवराजपार्क मंदिर, ता. २०-९-२०२६ जीवराजपार्क मंदिर, जिस मे दिव्यस्वरुप स्वामी (कालुपुर), मूर्तिजीवन स्वामी (कालुपुर) और नीलकंठ स्वामी (कोटेश्वर)ने कथा-वार्ता करके हरि भक्तो को लाभ दिये थे।

निकोल में ता. ९-९-२०२६ के दिन दिव्यस्वरुप स्वामी आदि संतो ने कथा-वार्ता के द्वारा हरिभक्तो को खुश किये थे।

जलझीलनी एकादशी को रात में रायसण, गांधीनगर में स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी कथा-वार्ता द्वारा हरिभक्तो को लाभ दिये थे।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खारोल (झाडी प्रदेश)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से धोलका मंदिर में बिराजमान श्री मोरली मनोहरदेव के २०० वर्ष के ''त्योहार'' के उपलक्ष्य में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से खारोल बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर मे ता. २४-८-२०२६ के दिन रात्रीय सत्संग सभा का अच्छा प्रबन्ध किया गया था । जिस में बालासिनोर मंदिर की सांख्ययोगी सरोजबा, सांख्ययोगी मीनाबा आदि बाईयोने कथा वार्ता कीर्तन भक्ति करके धोलका के त्योहार की सबको सूचना दी थई।(कोठारी का. दिलीपभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण (कटकियावाड)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण में महिने के दो रविवार बाल सभा नियमित होती है। इस में इस बार पर्ण-१-२ प्रश्नपेपर में से ३० बच्चे प्रथम श्रेणीमें पास हुए। हिंडोला के अवसर पर अनेक भाविक भक्त १ मास तक दर्शन किये। ता. ९-८-२०२६ को हिमालय दर्शन का प्रबन्ध किया गया था। ता. १-९-२०२६ के दिन सांख्ययोगी भक्तिबा की पुण्यतिथी पर सुंदर कांड किया गया था।(प्रकाशभाई कोठारी)

अपने व्रतोत्सव

आश्विन सुद-९ ता. २०-१०-२०२६ मंगलवार श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रगटोत्सव (संवत २०२८ अहमदाबाद), अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. की स्थापना।

आश्विन सुद-११ ता. २२-१०-२०२६ गुरुवार पांशाकुशा एकादशी।

आश्विन सुद-१२ ता. २३-१०-२०२६ शुक्रवार गढपुर मंदिर का पाटोत्सव।

आश्विन सुद-१४ ता. २५-१०-२०२६ रविवार शरदोत्सव व्रत की पूनम।

आश्विन सुद-१५ ता. २६-१०-२०२६ सोमवार मुकुटोत्सव पूनम।

आश्विन वद-१/२ ता. २७-१०-२०२६ मंगलवार बावला मंदिर का पाटोत्सव।

आश्विन वद-३ ता. २८-१०-२०२६ बुधवार आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजके द्वारा सर्व प्रथम स्थापित श्री वीर हनुमानजी महाराज का पाटोत्सव (सं. १९०६)।

आश्विन वद-७ ता. १-११-२०२६ रविवार पुष्यनक्षत्र के कारण चोपडा आर्डर का उत्तम दिन है।

आश्विन वद-११ ता. ५-११-२०२६ गुरुवार रमा एकादशी, वाघ बारस।

आश्विन वद-१२ ता. ६-११-२०२६ शुक्रवार धनतेरस, श्री लक्ष्मीजी की पूजा।

आश्विन वद-१३ ता. ७-११-२०२६ शनिवार काली चौदश श्री हनुमानजी की पूजा आरती।

आश्विन वद-१४ ता. ८-११-२०२६ रविवार दिवाली श्री लक्ष्मीकुवेर पूजन अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में धर्मकुल के करकमलो द्वारा समूह चोपडा पूजन।

आश्विन वद-३० ता. ९-११-२०२६ सोमवार, अन्नकूट महोत्सव, गोवर्धन पूजा।

कार्तिक सद-१ ता. १०-११-२०२६ मंगलवार संवत २०८३ नव वर्ष प्रारम्भ।

कार्तिक सद-२ ता. ११-११-२०२६ बुधवार भाईदूज।

कार्तिक सद-५ ता. १४-११-२०२६ शनिवार, लाभ पंचमी, कांकरिया राम बाग मंदिर श्री राधाकृष्णदेव और बालस्वरुप श्री हनुमानजी महाराज का पाटोत्सव।

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

श्रावण सुद-१ प.भ.अ.नि. गोपालभाई बेचरभाई पटेल (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-२** प.भ. धनजी रवजी माता (हिरापर-कच्छ) । **श्रावण सुद-३** प.भ. अंकितभाई परीख (शिलज), प.भ. परेशभाई ब्रह्मभट्ट (अहमदाबाद), प.भ. ऋतिका अनीलभाई पटेल (माणसा), प.भ. प्रियंकाबेन विस्मत पटेल, प.भ. तेजबाई मनजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ) । **श्रावण सुद-४** प.भ. कांतिभाई कचराभाई चौधरी (बालवा), प.भ. प्रकाशभाई पी. पटेल (चेनपुर), प.भ. दशरथभाई मणीलाल भावसार (अहमदाबाद), प.भ. रघुविरभाई एन. अमीन (वडोदरा), प.भ. घनश्यामभाई व्यास (घोडासर), प.भ. नीरुबेन प्रविणभाई सोनी (अहमदाबाद), श्री नरनारायणधेव प्रसन्नार्थे (चांदखेडा), प.भ. रुषभ चंद्रेशभाई गोर (भुज) । **श्रावण सुद-५** प.भ.अ.नि. शारदाबेन छोटाभाई पटेल (कालीगाम), प.भ. भरतभाई के. परमार (मालणीयाद) । **श्रावण सुद-६** प.भ. प्रतिककुमार विष्णुभाई पटेल (उंटवा), प.भ. मधुबेन सोमदास पटेल (साणंद), प.भ. वैभवी मयंकभाई कामदार (पोरबंदर) । **श्रावण सुद-७** प.भ. प्रतापभाई मोहनभाई पढारीया (खोलडीयाद) । **श्रावण सुद-८** प.भ. अ.नि. रामजी वाघझी, अ.नि. मानबाई रामजी, अ.नि. घनश्याम रामजी (मांडवी-कच्छ), प.भ. यश टांक (राचकोट), प.भ. अ.नि. कानजी मनजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ) । **श्रावण सुद-१०** गं.स्व. राधाबाई प्रेमजी, अ.नि. प्रेमजी मेघजी वेकरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. रमणभाई प्रभुदास पटेल (करजीसण), प.भ. दिव्यम हार्द पटेल (कनीपुर) । **श्रावण सुद-११** प.भ. कांति नारण केराई (नारणपर-कच्छ) । **श्रावण सुद-१२** प.भ. प्रहलादभाई अंबालाल पटेल (लवारपुर), प.भ. हरेशभाई भीखाभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. अ.नि. गोपालभाई जेठाभाई खेर (पच्छम), प.भ. अ.नि. प्रशांतभाई गोविंदभाई सांखला (ईन्दौर), प.भ. बचुभाई करशनभाई मालवणीया (सुरेन्द्रनगर), प.भ. कपिलाबेन बाबुभाई पटेल (निकोल) । **श्रावण सुद-१३** प.भ. कीर्तिभाई शुकला सह परिवार (अहमदाबाद), प.भ. कालुभाई लवाभाई देसाई (सलकी), प.भ. रतनशी मेघराज हालाई (गोधरा-कच्छ), प.भ. दर्शनभाई लक्ष्मणभाई पटले (मोरबी), प.भ. सूर्याबेन भरतकुमार पटेल (अहमदाबाद) । **श्रावण सुद-१४** प.भ. धर्मेन्द्रकुमार डाह्याभाई पटेल (सांकापुर) **श्रावण सुद-१५** प.भ. मितलभाई कांतिभाई पटेल (हिंमतनगर), प.भ. कल्पनाबेन राजुभाई (अहमदाबाद), प.भ. देवेनभाई हिरालाल पाटडीया (महेसाणा), प.भ. शिवजी नारणभाई मेपाणी (भुज), प.भ. रवि शामजीभाई राघवाणी (नवरंगपुरा) कोठारी स्वा. हरिस्वरुपदासजी गुरु स्वा. निर्लेपदासजी (सावरकुंडला) ।

श्रावण वद-१ प.भ. अशोकभाई मणीलाल पटेल (बीलासीया), प.भ. जीत रमेशभाई पूजार (धोळका), प.भ. जगदीशभाई हरिभाई कोराट (बगसरा), प.भ. नर्मदाबेन अमरशीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनजी रवजी हालाई (गोडपर-कच्छ), प.भ. प्रेमबाई मनजी हालाई (गोडपर-कच्छ) । **श्रावण वद-२** प.भ. अ.नि. घनश्यामभाई मूलजीभाई ठक्कर (दूधवाला) (अहमदाबाद), प.भ. दिपककुमार चिमनभाई पटेल (बायड), प.भ. कांति नारण केराई (नारणपर-कच्छ), प.भ. अनिलभाई नरसीभाई पटेल (थलतेज), प.भ. पंकजभाई सी.एम. परिवार (साबरमती), प.भ. जीज्ञेशभाई भानुप्रसाद शेलत (गांधीनगर), प.भ. गंगोत्रीबेन जयंतीभाई रंगाणी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. जमनाबेन शंकरलाल पटेल (माणसा), प.भ. अ.नि. मलय मधुसुदनभाई आदेसरा (नारणफुरा) । **श्रावण वद-३** प.भ. लीलाबेन डी. चौधरी (प्रतापपुरा), प.भ. जेठाभाई मनजीभाई हिराणी (कोडकी-कच्छ) । **श्रावण वद-४/५** प.भ. शामजी लालजी वेकरीया (माडंवी-कच्छ) । **श्रावण वद-६** प.भ. अ.नि. केसरबेन नारण हालाई (सुखपर-कच्छ) । **श्रावण वद-७** प.भ. खुश जीज्ञेशकुमर राणफरीया (गोता), अ.नि.स.गु. कोठारी स्वा. हरिनारायणदासजी (जूनागढ), प.भ. प्रहलादभाई विठ्ठलदास पटेल (करजीसण) । **श्रावण वद-८** प.भ. दिनेश कानजी राघवाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. अ.नि. शामजी धनजी हालाई (भक्तिनगर-कच्छ), गं.सव्. हिरबाई अरजण केराई (रामपर-कच्छ), प.भ. लालजी मनजी गाजपरीया (मांडवी-कच्छ) । **श्रावण वद-९** प.भ. अनंत रोमीतकुमार पटेल (कडी-कुंडाळ:, प.भ. सोनल परेशभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. मीनाक्षीबेन नवीनचंद्र पटेल (डांगरवा), प.भ. डॉ. मीत राकेश चोकसी (अहमदाबाद), प.भ. भानुबेन भीखाभाई झिंझुवाडीया (अहमदाबाद) । **श्रावण वद-१०** प.भ. मौलिन वजुभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. रणछोडभाई जोईताभाई चौधरी (बालवा), प.भ. अपेक्षाबेन जीज्ञेशकुमार पटेल (सरसपुर), प.भ. अ.नि. जसवंतभाई काळीदासभाई झवेरी (राजकोट), प.भ. मुकेशभाई बाबुभाई सोनी (पाटण), प.भ. अरुणाबेन कांतिभाई मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सुरजबेन जसमतभाई नावडीया (सुरत), प.भ. अ.नि. वल्लभभाई करशनभाई देवाणी (अहमदाबाद), प.भ. संजयभाई नटवरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हंसाबेन गोविंद जेसाणी (अहमदाबाद), प.भ. धवलभाई निर्वा भावसार (सीडनी) । **श्रावण वद-१२** श्री नरनारायणदेव ईन्फ्रा प्रा.ली. (गांधीनगर), प.भ. ध्रुवील अनीलभाई पटेल (ओळा), प.भ. चिमनभाई नारणदास पटेल (सोला), प.भ. अल्पेशभाई राखोलीया (वेळावदर), प.भ. अ.नि. भाणजीभाई रवजीभाई नाकराणी (उमरेठ), प.भ. किशन रविभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. वर्षाबेन लालजीभाई पटेल (पलीयड), प.भ. जयंतीभाई परसोतमदास पटेल (नारदीपुर), प.भ. वालजी करशन हिराणी (बलदिया-कच्छ), प.भ. आशिष झा. (अहमदाबाद) । **श्रावण वद-१३** प.भ. जसुभाई बाबुभाई पटेल (तेजपुरा), प.भ. अ.नि. केशरबाई कानजी भूडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. कुवरबेन भीमजीभाई वाटलीया (निकोल) । **श्रावण वद-३०** प.भ. अ.नि. शांतिभाई शीवाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मणीबेन हितेष पटेल (न्यु राणीप), निकोल महिला मंडळ, श्री नरनारायणदेव चरण सेवक (कालुपुर मंदिर) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji




वानकुंवर (केनेडा) मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।








अहमदाबाद मंदिर में जन्माष्टमी के अवसर मंदिर में उल्लास पूर्वक मनाये गये ।




जलझीलनी एकादशी को अपने मंदिर में परम्परागत गणपति का वरघोडा ।

नारायणघाट मंदिर में विसर्जन पहले पूजन करते संत-हरिभक्त गण ।



धोलका मंदिर में ''त्योहार'' के अवसर पर २०० घंटे की अखंड धून करते संत-हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 “ Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026





कंटकी (अमेरिका) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. आचार्य महाराजश्री ।







नोरफोक (वर्जिनिया) चैप्टर में सत्संग सभा में आशीर्वाद देते और हरिभक्तो के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ।

